Transforming Sanskrit Libraries

in the Context of

NEP-2020 for Viksit Bharat @2047

त्रिदिवसीय कार्यशाला का भव्य उद्घाटन

दिनांक : 26 मार्च 2025

स्थान : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA), दिल्ली

आयोजक : केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

उद्घाटन सत्र

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा Transforming Sanskrit Libraries in the Context of NEP 2020 for Vikasit Bharat @2047" विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हो रहा है। यह कार्यशाला 26 मार्च 2025 से 28 मार्च 2025 तक दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) में सम्पन्न होगी ।

उद्घाटन सत्र में संस्कृत ग्रंथालयों की भूमिका, उनके पुनरुद्धार, आधुनिक संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता और डिजिटल युग में उनके नवाचारों पर गहन विमर्श हुआ।

उद्घाटन सत्र के प्रमुख अतिथि एवं विद्वान

1. **मुख्य अतिथि** : JNU की कुलपति प्रो. शांतिश्री धूलिपुडी पंडित जी

2. **सारस्वत अतिथि** : भारतीय शिक्षण मंडल के संगठन मंत्री श्री शंकरानंद जी

3. **विशिष्ट अतिथि** : भारतीय शिक्षण मंडल के सदस्य सचिव श्री सच्चिदानंद जोशी जी

4. **संयोजक** : श्री रमेश गौर जी

5. **केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के ग्रंथपालक** : डा. पूरण मल गुप्त जी , कार्यशाला संयोजक

6 **उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष** : केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेडी जी

अन्य विशिष्ट प्रतिभागी : विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, महाविद्यालयों के प्राचार्य, ग्रंथपालक एवं शोधार्थी।

उद्घाटन सत्र का विवरण

कार्यशाला का शुभारंभ वैदिक घोष के साथ हुआ, जिसके उपरांत श्री रमेश गौर जी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। तत्पश्चात डा. पूरण मल गुप्त जी ने कार्यशाला के उद्देश्य और महत्व को स्पष्ट करते हुए प्रास्ताविक भाषण दिया।

मुख्य अतिथि प्रो. शांतिश्री धूलिपुडी पंडित जी ने अपने वक्तव्य में संस्कृत ग्रंथालयों के पुनरुद्धार और उनकी आधुनिक आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अंतर्गत संस्कृत ग्रंथालयों को डिजिटल युग के अनुरूप विकसित करना आवश्यक है, जिससे अधिकाधिक विद्यार्थी और शोधकर्ता प्राचीन ग्रंथों का लाभ उठा सकें।

विशिष्ट अतिथि श्री शंकरानंद जी ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि "ग्रंथालय हमारा प्राणस्वरूप है। संस्कृत के बिना संस्कार नहीं और संस्कार के बिना समृद्धि नहीं। समृद्धि ही सुस्थिर परिवर्तन का मूल है।" उन्होंने यह भी कहा कि हमें युगानुकूल परिवर्तन स्वीकार करना चाहिए, लेकिन अपनी मौलिकता और संस्कारों को बनाए रखना आवश्यक है।

भारतीय शिक्षण मंडल के सदस्य सचिव श्री सच्चिदानंद जोशी जी ने इस बात पर जोर दिया कि संस्कृत ग्रंथालय केवल पुस्तकों के संग्रहालय न रहकर, ज्ञान के जीवंत केंद्र बनने चाहिए। उन्होंने ग्रंथालयों को "ज्ञान साधना केंद्र"के रूप में विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

अध्यक्षीय भाषण

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेडी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्कृत भाषा और ग्रंथालयों के महत्व पर गहन विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि उनके विश्वविद्यालय के छात्र कम से कम पाँच भाषाओं में दक्ष होते हैं, जिनमें मातृभाषा, प्रादेशिक भाषा, संस्कृत, हिंदी और अंग्रेज़ी शामिल हैं।

उन्होंने संस्कृत को भारत की मूलभाषा (root language) बताते हुए कहा कि इसके आधार पर अन्य भारतीय भाषाओं को सीखना सरल हो जाता है। ग्रंथालयों को "सरस्वती का मंदिर" बताते हुए उन्होंने अपने अनुभव साझा किए कि कैसे एक ग्रंथपालक उनके जीवन में पहला मार्गदर्शक बना और कैसे अंग्रेज़ी कथा पुस्तकों को पढ़कर उन्होंने अंग्रेज़ी सीखी।

उन्होंने कहा कि संस्कृत ग्रंथालयों को आकर्षण के केंद्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। वर्तमान में कुछ ग्रंथालय अनाकर्षक हो गए हैं और "सांप के आवास स्थल" जैसे बन चुके हैं। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "कुछ ग्रंथालयों में ग्रंथपालक ही साँप बन चुके हैं, जो पुस्तकों को संरक्षित तो रखते हैं, लेकिन उन्हें किसी को उपलब्ध नहीं कराते।" अतः ग्रंथपालकों को "पाठकों के मित्र और मार्गदर्शक" की भूमिका निभानी होगी, तभी ग्रंथालय पुनः ज्ञान केंद्र बन सकेंगे।

इस अवसर पर उपस्थित सभी विद्वानों ने संस्कृत ग्रंथालयों के संरक्षण और उन्नयन के लिए ठोस योजनाएँ बनाने पर बल दिया।

संयोजक - डा. पूरण मल गुप्ता जी

दूरदर्शी - प्रो. गणेश तिम्मण्ण पण्डित

पुट विन्यास - श्री श्रीश समीर